

# जेम्स डेन सी. बेडकिो, पूर्व ईसाई, फलीपीस

रेटगि:

वविरण:

श्रेणी: [लेख नए मुसलमानों की कहानियां पुरुष](#)

द्वारा: James Den C. Bedico

पर प्रकाशति: 04 Nov 2021

अंतमि बार संशोधति: 04 Nov 2021

मैं जेम्स डेन सी. बेडकिो था, अब मैं अफराज सलीम सी. बेडकिो हूं, फलीपीस गणराज्य में इग्लेसिया नी क्रसिटो या चर्च ऑफ क्राइस्ट का एक पूर्व सदस्य।

इग्लेसिया नी क्रसिटो यहां फलीपीस में रोमन कैथोलिकि के बाद सबसे प्रभावशाली और दूसरा सबसे बड़ा ईसाई समूह है। मैं इग्लेसिया नी क्रसिटो के अंदर पैदा हुआ, बड़ा हुआ और बपतस्मा लिया, क्योंकि मेरे माता-पिता, भाई और बहन और मेरे अधिकांश रशितेदार इग्लेसिया नी क्रसिटो के समर्पति सदस्य हैं।

अपने बचपन के दौरान, मैं इग्लेसिया नी क्रसिटो की हर धार्मिकि गतविधिमें बहुत सक्रयि था और मैं नियमति रूप से हर गुरुवार और रवतिार को चर्च जाता था। अत्यधिकि बीमारी के मामलों को छोड़कर मैं कभी भी एक सामूहिकि सेवा से नहीं चूका। मैं गाना बजानेवालों का हसिसा था और मेरे माता-पति अभी भी चर्च में महत्वपूर्ण पदों पर हैं, जैसे डेकन और डेकनेस। मैंने इग्लेसिया नी क्रसिटो के स्वामतिव वाले स्कूल में अध्ययन कयिा, इसके सभी छात्र चर्च के सदस्य थे। कुल मलिकर, मैंने अपने जीवन के तीस साल इग्लेसिया नी क्रसिटो के उपासक के रूप में बतिाए। मुझे कभी भी दूसरे धर्मों की शक्तिषाओं को सुनने का मौका नहीं मलिा।

इस्लाम के संबंध में, मुझे इसके बारे में जानने में कभी दलिचस्पी नहीं थी, यह आंशकि रूप से फलीपीस में मुसलमानों की अल्पसंख्यक स्थतिकि के कारण था। मैं अक्सर उन्हें घर जाते समय देखता था; वे एक जनजाति, एक रक्त वंश, या फलीपीस के अलग-अलग द्वीपों में रहने वाले मूल नवासयिों के समूह के सदस्य प्रतीत होते थे। मैंने कभी नहीं सोचा था कि उनका कोई धर्म है! मैंने बचपन में कभी "इस्लाम"

शब्द नहीं सुना था, या हो सकता था कि मैंने उस शब्द पर कभी ध्यान ही नहीं दिया हो। मूल रूप से यहां फिलीपींस में इस्लाम एक भूला हुआ धर्म है। फिलीपींस एक ईसाई बहुल समाज है, खासकर देश के उत्तरी और मध्य भागों में। दक्षिणी भाग में मुसलमानों का काफी दबदबा है। ऐसा इसलिए है क्योंकि वे दक्षिण-पूर्व एशिया में एक मुस्लिम देश मलेशिया के निकट हैं।

जैसे-जैसे साल बीतते जा रहे थे, मैं अपने धर्म से दूर होता जा रहा था, मुझे 'खाली' महसूस हो रहा था, मानो किसी चीज़ के लिए तरस रहा हूं। फरि 2012 की शुरुआत में, मैंने एक अजीब सपना देखा कि एक मुस्लिम बच्ची ने अपनी आंखों को छोड़कर पूरे शरीर को हजाब (घूंघट) से ढक रखा था। बच्ची की उम्र करीब 6 साल रही होगी। जहां मैं खड़ा था वहां से लगभग 5 फीट की दूरी पर वह मुझे देख रही थी और फरि उसने ये शब्द कहे: "अस्सलामु अलैकुम!" मैं जाग गया, चौंक गया और भ्रमति हो गया ... मुझे ऐसा सपना क्यों आया?

मुस्लिम बच्चे का सपना देखने के बाद मैंने ऑनलाइन मुसलमानों के बारे में सर्च किया। मैंने "इस्लाम" शब्द टाइप किया और जो वेबसाइट आई, उनमें से एक [www.islamreligion.com](http://www.islamreligion.com) थी। मैंने उस वेबसाइट पर देखा और मैं चकति रह गया क्योंकि मैंने कभी नहीं सोचा था कि इस्लाम एक धर्म है और यह ईश्वर के एक होने का प्रचार करता है। इसी क्षण से मुझे इस्लाम में बहुत दिलचस्पी हो गई। जब मैंने ईश्वर के बारे में एक लेख पढ़ा तो मेरी दिलचस्पी और बढ़ गई। उसमें कहा गया था कि ईश्वर का कोई साथी या बेटा नहीं है! यह सदिधांत मेरे पूर्व धर्म के समान था, लेकिन एक महत्वपूर्ण अंतर था। मूलभूत विश्वासों से जो हमें सिखाया गया था, वह यह है कि मिसीह ईश्वर के पुत्र हैं। तो, मैंने मन ही मन सोचा कि यदि मेरा पूर्व धर्म हमें सिखाता है कि केवल एक ही ईश्वर है और यीशु मसीह ईश्वर के पुत्र हैं, तो यह संभव है कि ईश्वर का एक और पुत्र हो सकता है। यह प्रक्रिया तब तक जारी रह सकती है जब तक कि कोई देवता हो गए जो एक ईश्वर को एक ईश्वर के रूप में उसके कार्यों में मदद करते। इसी वजह से मेरा अपने पुराने धर्म पर से विश्वास उठ गया और मैंने इस्लामी आस्था की गहराई में जाना शुरू कर दिया।

मैं लगातार [www.islamreligion.com](http://www.islamreligion.com) पर जाता था और इस्लाम के बारे में कुछ ज्ञानवर्धक लेख पढ़ता था। मैं मुसलमानों की नमाज़ के तरीके से बहुत चकति था। मेरे लिए यह बिल्कुल स्पष्ट था कि ये प्रार्थनाएँ अधिक समग्र, ईमानदार, वनिम्र और सर्वशक्तिमान ईश्वर के अधीन थीं, खासकर जब मुसलमान रुकू या झुकते हैं (झुकना एक मालिकि के प्रति सम्मान का संकेत है) और फरि सज़दा या साष्टांग प्रणाम करते हैं। मुसलमानों द्वारा की जाने वाली प्रार्थनाओं में बहुत सम्मान है। मुझे आश्चर्य हुआ कि मेरे पूर्व धर्म में, प्रार्थनाओं के दौरान हम क्यों खड़े होकर अपने हाथों से प्रार्थना करते थे, इससे बहुत ध्यान भंग होता है!

मुझे मन ही मन इस्लामी शक्तिओं की सुंदरता नजर आने लगी। मैंने सोचा कि अगर हम किसी व्यक्ति को नमन करते हैं तो यह उस व्यक्ति के प्रति इतना सम्मान दखिते हैं, तो हम सर्वशक्तिमान ईश्वर के सामने क्यों न झुकें? जब हम पर बंदूक तान दी जाती है, तो हम उसकी दया की भीख मांगने वाले व्यक्ति के सामने झुकते हैं, तो हम उस सर्वशक्तिमान ईश्वर को क्यों ना दण्डवत करें जो हमारी मृत्यु का कारण बनने में सक्षम है और हमारी आत्माओं को नर्क में डालने में सक्षम है?

मैंने महसूस किया कि इस्लाम एक ऐसा धर्म है जो ईमानदारी से प्रार्थना, ठोस विश्वास और दृढ़ विश्वास के माध्यम से बहुत सम्मान के साथ ईश्वर की पूजा करने का आह्वान करता है।

एक और कारण है जिसकी वजह से मैंने इस्लाम को अपनाया, वह है पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की दया और कृपा उन पर बनी रहे) का जीवन। मैं यह देखकर चकित था कि कैसे मुसलमानों ने अपने पैगंबर (ईश्वर की दया और कृपा उन पर बनी रहे) की अंतिम सांस तक अच्छी तरह से देखभाल की और कैसे पैगंबर ने ईश्वर की एकता और ईश्वर के संदेश को फैलाने के लिए मुसलमानों के संघर्ष के लिए संघर्ष किया।

यह इस्लाम का सार है, हम दृढ़ता से ईश्वर के एक होने में विश्वास करते हैं और हम ईश्वर के दूत पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की दया और कृपा उन पर बनी रहे) का सम्मान करते हैं।

अब, एक मुसलमान के रूप में, मेरे कार्य अधिक परिष्कृत हैं। मैं अधिक ईश्वर-भक्त और ईश्वर-चेतन हूँ। मैं नियमिती रूप से प्रार्थना करके ईश्वर को हमेशा याद करता हूँ, मैं हर चीज में उन्हें याद करता हूँ जो मैं मन्िनों के माध्यम से करता हूँ और जब मैं पाप करता हूँ तो उनसे पश्चाताप करके उन्हें याद करता हूँ। ये सब मेरे जीवन के सुखद परिवर्तन हैं। मैं अपने धर्म का आनंद लेता हूँ और मुझे बहुत खुशी है कि मैंने इस्लाम को अपने नए धर्म के रूप में अपनाया। मैं बहुत खुश हूँ कि अब मैं यहां फिलीपींस में कानूनी रूप से इस्लाम में परिवर्तित हो गया हूँ और अब मैं अपने मुस्लिम नाम अफराज सलीम सी. बेडकी का उपयोग कर रहा हूँ। मैं वेबसाइट के संचालक सैमी को शाहदाह (विश्वास की गवाही) के उच्चारण में सहायता करने के लिए धन्यवाद देता हूँ और लाइव-चैट सत्रों के दौरान मेरे सवालों के जवाब देने के लिए मैं वेबसाइट के संचालक तारकि को धन्यवाद देता हूँ और मैं [www.Islamreligion.com](http://www.Islamreligion.com) को उन लोगों के लिए एक मार्गदर्शक होने के लिए धन्यवाद देता हूँ जो सही मार्ग नहीं जानते हैं।

अल्लहुमुदुलिल्लाह (सभी प्रशंसा और धन्यवाद ईश्वर के लिए हैं), मुझे सही रास्ते पर ले जाने के लिए।

इस लेख का वेब पता:

<https://www.islamreligion.com/hi/articles/10229>

कॉपीराइट © 2006-2020 सभी अधिकार सुरक्षित हैं। © 2006 - 2023 IslamReligion.com. सभी अधिकार सुरक्षित हैं।